रात्रि क्लास 3/7/68 :– आत्माएँ और परमात्मा बहुत दोनों की याद मिली है। जितना समय अलग रहे हैं फिर मिले हैं तो दिल होती है बच्चों को देखें। बार बार देखें, बार2 बच्चों को याद करें। बच्चे भी समझेंगे बाबा को बार बार देखें। यह बाबा तो बड़ा अच्छा है और फिर यह एक ही बाबुल है। बेहद का बाबुल है। बेहद की सद्गति भी करने वाला है। बेहद का राज्य देने वाला भी है बाबुल। सभी का दुख भी हरते हैं बाबुल। तो यह निश्चय होना चाहिए ना। और खुद है निष्कामी बाबुल। खुद कहते हैं सभी खत्म होना है। हिसाब–किताब चुक्तू होना है। विकल्प आये डरना न है। याद में रहेंगे तो खुशी में वह सभी उड़ जावेंगे। तुम्हारी भविष्य खुशी से भी अभी की खुशी जास्ती है। अभी तुम्हारा शान–मान बहुत ऊँचा है। बाप से हिल–मिल रहते हो। बादशाही करके सतयुग में मिलेगा; परन्तु बाप से पढ़ते हो, बाप साथ रहते हो यह पुरुषोत्तम संगमयुग सतयुग से भी अच्छा है; क्योंकि कल्याणकारी है। सतयुग को कल्याणकारी नहीं कहेंगे। अभी बाप तुम्हारा कल्याण करते हैं। यह समय बड़ा अच्छा है। जो बाप को याद करते होंगे, यह चिट–चैट सुनते होंगे कहेंगे हम भी साथ रहें। बाबा से अलग न होवें। आधा कल्प तो रहे हैं देवताओं के साथ। आधा कल्प रहे हैं असुरों के संग। यह है अलौकिक संग। वह तो कामन है। यह पुरुषोत्तम संगमयुग सबसे ऊँचा है। अगर कोई याद में रहता रहे। अपने से मीठी2 बातें करते रहे। बाप की महिमा गाते रहे। कितनी प्रदर्शनी म्युजियम निकलती है। बाप का गायन तो करना ही है। बाप भारत को ही हेविन बनाते हैं। शिवबाबा इस भारत को पैराडाइज़ स्वर्ग बना रहे हैं। तो ज़रूर मददगार भी होंगे। अकेला क्या करेगा। भारत माताएँ शिव शक्ति भी हैं। वन्देमात्रम् यह है जो विश्व को पवित्र बनाती हैं। तुम अर्थ नहीं समझते हो। वन्देमात्रम् कौन? वह धरती को कह देते। माताओं की

जय–जयकार नहीं करते। महिमा लायक भी बनना है। सतयुग में यह बातें नहीं होता। इसलिए महिमा लायक बनो तब पूजा लायक भी बनो। महिमा और पूजा अलग2 बात है। वह है भविष्य पद। इस समय तुम सारे विश्व का कल्याण करते हो। वन्देमात्रम् नहीं गाते। वन्देमात्रम्। 5000वर्ष की बात गोया कल की बात है। एक तरफ हो तुम बच्चे। तुम कितने थोड़े हो। मुठ भर हो। पीछे आते रहेंगे वृद्धि को पाते रहेंगे। तुम समझते हो हम न सिर्फ भारत का सारी दुनिया का कल्याण करते हैं। फिर उस कल्याणकारी विश्व में तुम राज्य करते हो। अभी राजधानी स्थापन हो रही है। जो2 जास्ती सर्विस करते होंगे, याद की यात्रा में रहते होंगे जरूर ऊँच पद पावेंगे। यह बातें संगम पर ही होती है। बाप पूछते हैं बताओ कितना खुशी का पारा चढ़ा हुआ है। बाकी थोड़ा समय है। बाबकी यह बाबा तो जितना समय हो उतना ही अच्छा है। सतयुग में ऐसा कोई नहीं होता जो बाप भी हो, टीचर भी हो, सद्गुरु भी हो। संगम पर ही बाप है जो शिक्षक भी है, सद्गुरु भी है। पत्थर बुद्धि मनुष्य ऐसे हैं तो मुश्किल बुद्धि में बैठता है। तुम रूहानी स्वदर्शनचक्रधारी हो। वह सोसल वर्कर्स भी अभी निकले हैं। क्रिश्चन के समय नहीं थे। अभी निकले हैं तो तुम स्प्रीचुअल वर्कर्स भी अभी निकले हो। वह जिस्मानी सर्विस करते हैं। तुम स्प्रीचुअल। तुम सोसाइटी के रूहानी सेवा करते हो। वह जिस्मानी सर्विस करते हैं। आजकल तो सोसल वर्कर्स बहुत ही हैं। मेल भी हैं तो फिमेल्स भी हैं। लाखों की तादाद में हैं। भारत कोई कम नहीं हैं। बहुत होंगे। इसमें मेहनत है। पहले2 तो पवित्रता चाहिए। मूल बात है यह। झगड़ा इसमें होता है। मारें इसमें खाती हैं। यह भी सहन करना होता है। जो जास्ती सहन करते हैं राजाई भी उनको ही मिलती है। भल माताएँ बहुत हो। वहाँ तो बराबर ही होंगे। माताएँ पुरुष भी बन सकती हैं। बाप ने समझाया है एक दो जन्म मेल – एक दो जन्म फिमेल। सदा मेल ही नहीं होंगे। अभी तो बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए। सन्यासी लोग इतना माथा मारते हैं मुक्ति के लिए। तुम कहते हो वह तो हमारा स्वीटहोम है। वह लोग होम(घर) नहीं कहेंगे। तुम जानते हो हमको घर जाना है। इसलिए खुशी होती है। पुराना सम्बन्ध, पुरानी दुनिया सभी खत्म हो जावेंगे। आत्मा भी नई सतोप्रधान हो

जावेगी। शरीर भी नया। कपड़े भी ऐसे मिलेंगे। सदैव हेल्दी काया कल्पवृक्ष समान रहेंगे। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। नई दुनिया के मालिक तो हम 5000 वर्ष बाद बनते हैं। गिनती कर सकते हो। इतने मास, इतने दिन, इतने घंटा, इतने सेकण्ड। कोई हिसाब निकाले तो एक्युरेट निकाल सकते हैं। 5000 वर्ष तो पूरे हैं। एक का भी फर्क नहीं पड़ सकता। इसका हिसाब निकालना तो सहज है। बच्चों को बहुत2 खुशी होनी चाहिए। तुम जानते हो कृष्ण पूरी(पुरी) स्थापन हो रही है। पुरानी दुनिया खत्म होनी है। कंसपुरी से कृष्णपुरी होती है। कंस असुरों को कहा जाता है। सबसे जास्ती खुशी तो तुम बच्चियों, बूढ़ियों, अबलाओं को होनी चाहिए। अच्छा बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।